FACULTY OF LANGUAGES

SYLLABUS
of
M.A. HINDI (Semester: I -II)

(Under Continuous Evaluation System)

Session: 2018-19

The Heritage Institution

KANYA MAHA VIDYALAYA JALANDHAR (Autonomous)

M.A(Hindi)

Session 2018-19

Programme Specific outcomes-

एम.ए हिन्दी पांच प्रश्न पत्रों का दो वर्षीय कोर्स है। एम ए हिन्दी का उद्देश्य छात्राओं को भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रति जागरुक करना तथा हिन्दी के विविध प्रयोजनमूलक रूपों मीडिया के प्रति सचेत करना है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाषा की सत्ता और गुणवत्ता से परिचित करवाना इसका लक्ष्य है। यह कोर्स अकादमिक स्तर पर विद्वानों, प्राध्यापकों, शोधार्थियो, विश्लेषकों और विविध क्षेत्रों के अधिकारीयों के सोच के स्तर में बढ़ौतरी करने में सक्षम है।

इस पाठ्यक्रम की सफलतापूर्वक सम्पन्नता के उपरांत विद्यार्थी इस योग्य होंगे :

PSO-1: भाषा उच्चारण में निपुणता, व्याकरण सम्बन्धी अवधारणा की स्पष्टता ।

PSO-2: प्राचीन एवं नवीन हिन्दी कवियों की देन के गहन ज्ञान की प्राप्ति।

PSO-3: हिन्दी के भाषिक और साहित्यिक रूप के साथ साथ उसके प्रयोजन मूलक रूपों –बैंक, रेलवे, समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविज़न, मीडिया, अनुवाद की जानकारी एवं रोज़गार के अवसर ।

PSO-4: भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र की अवधारणा, विभिन्न समीक्षा पद्दतियों का सम्यक ज्ञान। रस, शब्द शक्तियों और विविध वादों का गहन अध्ययन।

PSO-5: भाषा और भाषा विज्ञान, समाज विज्ञान, मनोभाषा विज्ञान, शैलिविज्ञान, रूपांतरण प्रजनक, व्यवस्था परक, प्रकार्य परक व्याकरण की समस्त जानकारी एवं भाषा वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में साहित्य का विश्लेषण करने का सम्पूर्ण ज्ञान।

PSO-6: देवनागरी लिपि का ज्ञान, समास, सन्धि, उपसर्ग, प्रत्यय, लिंग, वचन, कारक की व्यावहारिक जानकारी।

PSO-7: कोश निर्माण के सिद्दांत, प्रक्रिया, विभिन्न कोश ग्रन्थ और विभिन्न कोशकारों का सामान्य परिचय एवं व्यावहारिक ज्ञान में दक्षता।

PSO-8: हिन्दी की प्रयोजन मूलकता को सिद्ध करती पत्रकारिता के क्षेत्र की सैद्दांतिक और व्यावहारिक जानकारी, सम्पादन, प्रूफ पठन, समाचार लेखन व वाचन, उद्‌घोषणा: लेखन व वाचन, संवाद, विज्ञापन, फीचर, रिपोर्ताज, पटकथा, डाक्यूमेंट्री, नाटक लेखन का व्यावहारिक ज्ञान।

PSO-9: राजभाषा शिक्षण के अंतर्गत राजभाषा के अधिनियम, राष्ट्रपति के आदेशों व संवैधानिक नियमों की सम्पूर्ण जानकारी और कार्यालयी टिप्पण, प्रारूपण, संक्षेपण, विस्तारण, पत्र लेखन एवं पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्दांत की विस्तृत जानकारी।

Scheme of Studies and Examination
Session 2018-19

M.A. (Hindi)

Semester I								
Course Code	Course Name	Course Type	Marks				Examination time (in Hours)
			Total	Ext.		CA	
				L	P		
MHIL-1261	आधुनिक हिन्दी काव्य : द्विवेदीयुगीन एवं छायावाद	C	80	64	-	16	3
MHIL -1262	हिन्दी साहित्य का इतिहास (खंड- एक)	C	80	64	-	16	3
MHIL -1263	भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यलोचन	C	80	64	-	16	3
MHIL - 1264	प्रयोजनमूलक हिन्दी	C	80	64	-	16	3
MHIL -1265 (opt-i)	हिन्दी नाटक और रंगमंच	O	80	64	-	16	3
MHIL -1265 (opt-ii)	कोश विज्ञान	O	80	64	-	16	3
MHIL -1265 (opt-iii)	पंजाब का मध्यकालीन हिन्दी साहित्य	O	80	64	-	16	3
Total			**400**				

Scheme of Studies and Examination
Session 2018-19

M.A. (Hindi)

Semester II								
Course Code	**Course Name**	**Course Type**	**Marks**					**Examination time (in Hours)**
			Total	**Ext.**		**CA**		
				L	**P**			
MHIL -2261	आधुनिक हिन्दी काव्य : छायावादोत्तर काल	C	80	64	-	16		3
MHIL -2262	हिन्दी साहित्य का इतिहास (खंड- दो)	C	80	64	-	16		3
MHIL -2263	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	C	80	64	-	16		3
MHIL - 2264	मीडिया लेखन	C	80	64	-	16		3
MHIL -2265 (opt-i)	नाटककार मोहन राकेश	O	80	64	-	16		3
MHIL -2265 (opt-ii)	भारतीय साहित्य	O	80	64	-	16		3
MHIL -2265 (opt-iii)	पंजाब का आधुनिक हिन्दी साहित्य	O	80	64	-	16		3
Total			**400**					

C-Compulsory
O-Optional

Master of Arts (HINDI) (Semester-I)
Session 2018-19

Course Code: MHIL-1261

आधुनिक हिंदी काव्य : द्विवेदीयुगीन एवं छायावाद

Course Outcomes:

Co-1: इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी आधुनिक हिंदी कविता के प्रस्थान बिंदु द्विवेदीयुगीन काव्य और तदुपरांत खड़ी बोली हिंदी कविता के स्वर्णयुग छायावादी काव्य को समझने के साथ हिंदी कविता के विकास में इन दोनों काव्यधाराओं के योगदान से अवगत होंगे |

Co-2: इस पाठ्यक्रम में द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि मैथिलीशरण गुप्त की सर्वश्रेष्ठ रचना 'साकेत' तथा छायावादी युग के प्रमुख कवि श्री जयशंकर प्रसाद की कृति 'कामायनी' तथा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला कि कविताएं वस्तुतः समकालीन परिस्थितियों के समानांतर भारतीय चेतना के क्रमिक विकास कि उत्कृष्ट प्रस्तुति हैं|

Co-3: इससे विद्यार्थी एक समय कि सामाजिक परिस्थितियों की सापेक्षता में बदल रहे जीवन मूल्यों के साथ मानव-चेतना के संघर्ष को सहज ही समझ सकेंगे |

Course Code: MHIL-1261

Course Title : आधुनिक हिंदी काव्य : द्विवेदीयुगीन एवं छायावाद

Total:80

CA:16

TH: 64

समय : तीन घन्टे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश

यह प्रश्नपत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है जो सप्रसंग व्याख्या से सम्बन्धित है | इसमें चार-चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा |प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपातसे क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा |प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा|

इकाई– एक

व्याख्या भाग :

निर्धारित कवि निर्धारित पाठ्य पुस्तकें :

(क) मैथिलीशरण गुप्त : साकेत, साहित्य सदन, झाँसी,साकेत(नवम सर्ग) पृ.5- पृ.35- **तक**

(ख) जयशंकर प्रसाद : कामायनी, भारती भंडार, इलाहाबाद, 1971 (श्रद्धा,लज्जा ओर आनंद सर्ग)

(ग) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला: राग विराग, सम्पादक रामविलास शर्मा, लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,1974 (राम की शक्तिपूजा,सरोज स्मृति, जागो फिर एक बार 1-2, जूही कि कली, बांधो न नाव इस ठांव, बंधु, कुकुरमुत्ता)

इकाई – दो

मैथिलीशरण गुप्त :

-नवजागरण ओर द्विवेदीयुग के प्रतिनिधि कवि गुप्त
-साकेत का महाकाव्यत्व
-नवम सर्ग का काव्य-वैभव
- राष्ट्रीय चेतना के कवि मैथिलीशरणगुप्त
-मैथिलीशरणगुप्त का जीवन-दर्शन
-साकेत: सांस्कृतिक आधार और युगीन दर्शन
-उर्मिला का चरित्र चित्रण

इकाई –तीन

जयशंकर प्रसाद :

-छायावादी काव्यान्दोलन और जयशंकर प्रसाद
-कामायनी कि अंतर्वस्तु
-कामायनी :महाकाव्यत्व
-कामायनी: दार्शनिक पक्ष
-कामायनी: इतिहास और कल्पना
-कामायनी की रूपक योजना
-कामायनी की भाषा-शैली

इकाई – चार

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला:

-निराला की काव्य विकास यात्रा के विभिन्न चरण
-निराला का जीवन दर्शन
-छायावादी कवि निराला
-प्रगतिवादी कवि निराला
-प्रयोगधर्मी कवि निराला
-निराला का काव्य-सौन्दर्य
-राम की शक्ति पूजा:कथ्य और शिल्प
-सरोज-स्मृति: कथ्य और शिल्प

सहायक पुस्तकें :

1. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, डॉ. श्रीनिवास शर्मा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली |
2. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि,डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा |
3. साकेत एक अध्ययन,नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली|
4. मैथिलीशरण गुप्त: एक मूल्यांकन, राजीव सक्सेना, हिंदी बुक सेन्टर,नई दिल्ली|
5. मैथिलीशरण गुप्त: कवि और भारतीय संकृति के आख्याता, उमाकांत, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली|
6. साकेत सुधा,रामस्वरूप दुबे,नारायण बुक डिपो,कानपुर |
7. प्रिय प्रवास औरसाकेत की आदर्शगत तुलना,श्री वल्लभ शर्मा,मंगल प्रकाशन, जयपुर|
8. कामायनी में काव्य,संस्कृति और दर्शन,डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना,विनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा|
9. मिथक ओर स्वरूप :कामायनी कि मनस्सौन्दर्या सामाजिक भूमिका, रमेश कुंतल मेघ,ग्रंथम कानपुर |
10. कामायनी:मूल्यांकन ओर मूल्यांकन,इन्द्रनाथ मदान,नीलाभ प्रकाशन,इलाहाबाद|
11. कामायनी:एक पुनर्विचार,गजानन माधव मुक्तिबोध,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली|
12. कामायनी के अध्ययन की समस्याएं,डॉ. नगेन्द्र,नेशनल पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली |
13. निराला की साहित्य साधना,रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली|
14. क्रांतिकारी कवि निराला,बच्चन सिंह,हिंदी प्रचारक,वाराणसी|
15. काव्य-पुरुष निराला,जयनाथ नलिन,आलोक प्रकाशन,कुरुक्षेत्र|

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)
Session 2018-19

Course Code: MHIL-1262

Course Title: हिंदी साहित्य का इतिहास (खंड-एक)

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO–1: इतिहास कि दृष्टि से साहित्यिक स्तर की रचनाओं का मुल्यांकन करना साहित्य का इतिहास कहलाता है | यदि आधुनिक साहित्य के स्वरूप को जानना है तो यह अत्यंत आवश्यक है कि उसके विगत का विवरण भी जाना जाए |

CO–2: विगत का विवरण एवं बोध जिसने अतीत के जीवन को प्रभावित किया हो ओर भविष्य के लिए भी संकेत हो , साहित्य का इतिहास कहलाता है |

CO–3: अत: वर्तमान भाषा ओर साहित्य के विकास को जानने के लिए यह प्रश्नपत्र अनिवार्य है|

Master of Arts (HINDI) (Semester-I)
Session 2018-19

Course Code: MHIL-1262

Course Title: हिंदी साहित्य का इतिहास (खंड-एक)

Total:80

CA:16

TH: 64

समय : तीन घन्टे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश

यह प्रश्नपत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है | इसमें चार-चार अंकों के छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा |प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा |प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा |

इकाई- एक

पाठ्य विषय :

-साहित्येतिहास लेखन : अर्थ एवं परिभाषा |
- हिंदी साहित्य के इतिहास की लेखन परम्परा|
- हिंदी साहित्य का इतिहास: काल विभाजन,सीमा निर्धारण और नामकरण, हिन्दी साहित्य का आरंभ कब|

इकाई – दो

-आदिकाल की पृष्ठभूमि,सिद्ध-नाथ-जैन साहित्य,रासो-काव्य |
- हिंदी साहित्य के आदिकाल का ऐतिहासिक परिदृश्य,साहित्यिक प्रवृतियां,काव्य-धाराएं,प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनायें|

इकाई –तीन

-पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) कि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भक्ति आन्दोलन,विभिन्न काव्यधाराएं तथा वैशिष्ट्य |

-प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका अवदान |

-भारत में सूफी मत का विकास तथा प्रमुख सूफ़ी कवि और काव्यग्रंथ|

-राम और कृष्ण काव्य,राम कृष्ण काव्येतर काव्य, भक्तेतर काव्य, प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य|

इकाई – चार

-उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल)की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल सीमा और नामकरण,
रीतिकाल साहित्य की विभिन्न धारायें (रीतिबद्ध,रीतिसिद्ध,रीतिमुक्त),प्रवृतियां और विशेषताएं,प्रतिनिधि रचनाकार और रचनायें,रीतिकालीन गद्य साहित्य|

सहायक पुस्तकें :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आ. रामचन्द्र शुक्ल , नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपा. डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।
3 . साहित्य इतिहास का दर्शन,आचार्य नलिन विलोचन शर्मा,बिहार राष्ट्र परिषद्,पटना |
4. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ.रामकुमार वर्मा, रामनारायण बेणीमाधव, इलाहाबाद।
5. हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग–1,2,3) प. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, ब्रह्मनाल, वाराणसी ।
6. हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास (भाग–1से 16),नगरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी|
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. हुकुमचंद राजपाल, विकास पब्लिशिंग हाउस ,नई दिल्ली ।
8. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,बच्चन सिंह,राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली|

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2018-19

Course Code: MHIL-1263

भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO–1 : इस प्रश्नपत्र में दिए गए पाठ्यक्रम का उद्देश्य साहित्य सृजन के मूल सिद्धान्तों के सन्दर्भ में प्राचीन काव्यशास्त्रीय आचार्यों कि स्थापनाओं एवं उनके द्वारा दिए गये सिद्धांतों से विद्यार्थियों को अवगत कराना है |

CO–2 : वर्तमान समय में साहित्य के स्वरूप उसके सृजन सिद्धांतों , भाषा एवं शैली में परिवर्तन के परिणामस्वरूप आलोचना के मानदंडों ओर समीक्षा पद्धितियों में बदलाव आ चूका है किन्तु विद्यार्थियों को साहित्य सृजन के क्रमिक विकास कि जानकारी देना भी अतावश्यक है |

CO–3: भारतीय काव्यशास्त्र में हम साहित्य सृजन एवं समीक्षा के सम्बन्ध में विद्वान आचार्यों के द्वारा दिए गये मतों एवं सिद्धांतों के क्रमिक विकास ,साहित्य पर उनके प्रभाव ओर उनके योगदान तथा उनकी सीमाओं कि जानकारी प्राप्त करते हैं |

CO–4 : साहित्य सृजन ओर समीक्षा में नए रुझान ओर परिवर्तनों के प्रति रुझान उत्पन्न करते हुए साहित्य की नई भाव-भूमि से जोड़ने के लिए पाठ्यक्रम में विभिन्न विचारधाराओं पर आधारित आधुनिक समीक्षा पद्धतियों को भी सम्मिलित किया गया है |

CO–5 : हिंदी भाषा से जुड़े किसी भी व्यवसाय चाहे वह अध्यापन का हो या समीक्षा का , पत्रकारिता का हो या रचनात्मक लेखन का उसमें प्रदर्शन के लिए काव्यशास्त्र के मूल सिद्धांतों कि जानकारी विद्ययार्थियों के ज्ञान कि सुदृढ़ आधारशिला है किसी भी भवन की मजबूत नींव की तरह |

Co–6 : रस, अलंकार, छंद, ध्वनि, वक्रोक्ति , औचित्य,प्रतीक , बिम्ब इत्यादि का ज्ञान विद्यार्थियों को रचनात्मक अभिव्यक्ति में परोक्ष एवं सूक्ष्म भूमिका निभाने वाले तत्वों कि जानकारी उन्हें सैद्धांतिक ज्ञान ओर व्यावहारिक कौशल दोनों प्रदान करती है |

Master of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2018-19

Course Code: MHIL-1263

Course Title: भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

Total:80

CA:16

TH: 64

समय : तीन घन्टे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश

यह प्रश्नपत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है | इसमें चार-चार अंकों के छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा |प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपातसे क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा |प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा |

इकाई-एक

काव्य: काव्य-लक्षण, काव्य तत्व तथा रस का स्वरूप के साथ रस के अंग काव्य हेतु , काव्य प्रयोजन, काव्य के प्रकार|

इकाई – दो

रस सम्प्रदाय : रस का स्वरूप, रस निष्पति, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा |
अलंकार सम्प्रदाय : परम्परा और मूल स्थापनाएं, अलंकारों का वर्गीकरण |

इकाई –तीन

ध्वनि संप्रदाय : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धांत की स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद |

रीति - सिद्धांत : रीति की अवधारणा, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएं, काव्य–गुण, रीति एवं शैली|

वक्रोक्ति सिद्धांत : वक्रोक्ति की अवधारणा एवं मान्यताएं, वक्रोक्ति के भेद ।

इकाई – चार

औचित्य सिद्धांत : औचित्य से अभिप्राय, औचित्य का स्वरूप एवं भेद, प्रमुख स्थापनाएं, काव्य में औचित्य का प्रमुख स्थान एवं महत्व ।

हिंदी आलोचना की प्रमुख प्रवृतियां : शास्त्रीय, तुलनात्मक, मनोविश्लेषणवादी, शैलीवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय ।

सहायक पुस्तकें :

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र, डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली ।
2. आलोचक और आलोचना : बच्चन सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी |
3. हिंदी समीक्षा: स्वरूप औरसन्दर्भ,रामदरश मिश्र,माकमिलन कम्पनी, दिल्ली|
4. आधुनिक हिंदी समीक्षा-प्रकीर्णक से पद्धति तक, यदुनाथ सिंह,आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली|
5. हिंदी आलोचना का इतिहास, माक्खन लाल शर्मा, शब्द और शब्द प्रकाशन, दिल्ली|
6. भारतीय समीक्षा सिद्धान्त, सूर्य नारायण द्विवेदी,संजय बुक सैंटर, वाराणसी |
7. भारतीय साहित्य दर्शन, सत्यदेव चौधरी, साहित्य सदन, देहरादून|
8. भारतीय काव्यशास्त्र, भागीरथ मिश्र,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी|
9. काव्यशास्त्र, भागीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी|
10. रस सिद्धान्त की दार्शनिक एवं नैतिक व्याख्याएं, तारकनाथ बाली,विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2018-19

Course Code: MHIL-1264

प्रयोजनमूलक हिंदी

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1 : हिंदी भारत की राष्ट्र भाषा है | यह अंतर्राष्ट्रीय भाषा भी है | अत: स्वभाविक ही है कि चुनिन्दा भाषाओं में से यह एक महत्वपूर्ण भाषा है |

CO-2 : भारत कि अभिजात राष्ट्र भाषा होने के कारन देश के प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का व्यापक प्रयोग ही राष्ट्रीयता कि दृष्टि से अत्युक्त भी है |

CO-3 : हिंदी राज भाषा से लेकर रेलवे स्टेशन , मंदिर धार्मिक स्थलों तक ही सीमित नहीं बल्कि तकनिकी शिक्षा , कानून ओर न्यायलय , वाणिज्य , व्यापार सभी क्षेत्रों में हिंदी का व्यापक प्रयोग है |

CO-4 : इस प्रश्न पत्र के माध्यम से विद्यार्थी हिंदी भाषा के सभी रूपों का गहनतम ज्ञान प्राप्त कर भाषा सम्बन्धी क्षेत्रों में नौकरी पा सकते हैं |

CO-5 : भाषा के विविध क्षेत्रों (कार्यालयी , व्यवसायिक , प्रशासनिक, राजकीय) में पारंगत हो सकता है |

CO-6 : कम्प्यूटर व मीडिया के क्षेत्र में भी रोज़गार प्राप्त ही सकता है |

Master of Arts (HINDI) (Semester-I)
Session 2018-19

Course Code: MHIL-1264

Course Title: प्रयोजनमूलक हिंदी

Total:80

CA:16

TH: 64

समय : तीन घन्टे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश :

यह प्रश्नपत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है | प्रथम भाग में सम्पूर्ण में से चार-चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा |प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपातसे क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा |प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा |

इकाई –एक

पाठ्य विषय :

कामकाजी हिन्दी

-हिंदी के विभिन्न रूप-संचार : भाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा |
-कार्यालयी हिंदी (राज भाषा) के प्रमुख रूप: प्रारूपण, पत्रलेखन, संक्षेपण,पल्लवन, टिप्पण|
-पारिभाषिक शब्दावली- स्वरूप एवं महत्व, पारिभाषिक शब्दावली-निर्माण के सिद्धान्त|
-ज्ञान-विज्ञानं के क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली निर्धारित क्षेत्र: बैंक,रेलवे, कम्पयूटर और सामान्य प्रशासनिक शब्दावली (संलग्न)

इकाई – दो

-हिंदी कम्प्यूटिंग : कम्प्यूटर की आधारभूत व्यावहारिक जानकारी|

-कम्प्यूटर: परिचय उपयोग तथा क्षेत्र

-इन्टरनेट सम्पर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख-रखाव एवं इन्टरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र|

-वेब पब्लिशिंग |

इकाई –तीन

-इंटरनेट एक्स्प्लोरल अथवा नेटस्केप नेविगेटर
-लिंक, ब्राउजिंग, ईमेल भेजना/प्राप्त करना, हिंदी के प्रमुख इन्टरनेट पोर्टल, डाउनलोडिंग व अपलोडिंग,

हिंदी सॉफ्टवेयर, पैकेज |

इकाई –चार

पारिभाषिक शब्दावली हेतु अनुशंसित पुस्तक-हिंदी भाषा प्रयोजनमूल्कता एवं आयाम, वागीश प्रकाशन,जालंधर | कार्यालयी टिप्पणियों के हिंदी रूप सम्बन्धी शब्दावली पृ.73-76 तक, कम्पूटर शब्दावली पृ.144-147 तक |

सहायक पुस्तकें:

1. प्रयोजनमूलक हिंदी-विनोद गोदरे,वाणी प्रकाशन, दिल्ली|
2. प्रयोजनमूलकहिंदी: सिद्धान्त और प्रयोग दंगल झाल्टे, विद्या विहार, नई दिल्ली|
3. राजभाषा विविध, मानिक मृगेश, वाणी प्रकाशन, दिल्ली|
4. ज्ञान शिखा (प्रयोजनमूलक हिंदी विशेषांक),संपा. डॉ.सूर्यप्रसाद दीक्षित, हिंदी विभाग,लखनऊ विश्वविद्यालय प्रकाशन|
5. अनुवाद प्रक्रिया, डॉ.रीता रानी पालीवाल, साहित्य निधि, दिल्ली|
6. व्यावहारिक हिंदी, कैलाशचन्द्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली|
7. कम्प्यूटर और हिंदी,डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली|
8. संक्षेपण और विस्तारण, कैलाशचन्द्र भाटिया,सुमन सिंह प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली|
9. प्रयोजनमूलक हिंदी,रघुनन्दन प्रसाद शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन|
10. प्रयोजनमूलक हिंदी,संरचना एवं अनुप्रयोग, डॉ. रामप्रकाश,डॉ. दिनेश गुप्त,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली|
11. प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिंदी,डॉ. ओमप्रकाश सिंहल,जगत राम प्रकाशन, दिल्ली|
12. अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएं, भोलानाथ तिवारी/ओमप्रकाश गाबा,शरद प्रकाशन, दिल्ली |
13. राजभाषा हिंदी, डॉ कैलाशचन्द्र भाटिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली|
14. प्रशासनिक कार्यालय की हिंदी,डॉ. रामप्रकाश/डॉ. रामप्रकाश,डॉ. दिनेश गुप्त,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली|
15. व्यावहारिक हिंदी डॉ.रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव, डॉ. भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली|
16. प्रयोजनमूलक हिंदी, कमल कुमार बोस,क्लासिकल पब्लिशिंग, नई दिल्ली |
17. हिंदी की मानक वर्तनी कैलाश चंदर भाटिया,रचना भाटिया, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली|
18. कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग: सिद्धान्त ओर तकनीक,राजीव, राजेंदर कुमार,साहित्य मंदिर, दिल्ली|
19. प्रयोजनमूलक हिन्दी,डॉ. राजनाथ भट्ट,हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला|

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2018-19

Course Code: MHIL-1265

(वैकल्पिक अध्ययन)

विकल्प –एक

हिंदी नाटक और रंगमंच

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: नाटक हिंदी गद्द साहित्य की अन्यतम विधा है | हिंदी नाटकों का प्रारम्भ भारतेंदु से माना जाता है |

CO-2: भारतेंदु युग के नाटककारों ने लोक चेतना के विकास के लिए नाटकों की रचना की ताकि उस समय कि सामाजिक समस्याओं को नाटकों में अभिव्यक्त किया जा सके |

CO-3: इस प्रश्नपत्र के माध्यम से विद्यार्थी आधुनिक काल में भारतेंदु युग के नाटकों के विकास तथा रंगमंच के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा महान नाटककारों भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद तथा लक्ष्मीनारायण लाल का अध्ययन करेंगे |

CO-4: यह प्रश्नपत्र विद्यार्थियों की रंगमंच के प्रति रूचि उत्पन्न करेगा और उनकी सृजनात्मक क्षमता को उभरने में मदद करेगा |

Master of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2018-19

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प –एक

Course Title: हिंदी नाटक और रंगमंच

Total:80

CA:16

TH: 64

समय : तीन घन्टे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश

यह प्रश्नपत्र पांच भागों में विभाजित है || प्रथम भाग अनिवार्य है जो सप्रसंग व्याख्या से सम्बन्धित है | इसमें चार-चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा | प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपातसे क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा |प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा|

इकाई –एक

व्याख्या एवं अध्ययन के लिए निर्धारित पुस्तकें :

(क) अंधेर नगरी: भारतेन्दु हरिश्चंदर,अशोक प्रकाशन,नई दिल्ली|
(ख) ध्रुवस्वामिनी : जयशंकर प्रसाद , प्रसाद प्रकाशन,वाराणसी|
(ग) एक सत्य हरिश्चंदर:लक्ष्मी नारायण लाल.राजपाल एंड संस|

इकाई –दो

भारतेन्दु का रंगमंच : सामर्थ्य और सीमाएं
पारसी रंगमंच,पृथ्वी थिअटर,नुकड़ नाटक,रेडियो नाटक
भारतेन्दु की नाट्य चेतना
अंधेर नगरी का मुख्य सन्दर्भ
अंधेर नगरी में यथार्थ बोध
अंधेर नगरी में व्यंग्य भाषा, शैली
अंधेर नगरी का नाट्य शिल्प,प्रतीक विधान |

इकाई –तीन

जयशंकर प्रसाद: नाट्य यात्रा में ध्रुवस्वामिनी का महत्वांकन
ध्रुवस्वामिनी : इतिहास और कल्पना का योग
ध्रुवस्वामिनी : राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना
ध्रुवस्वामिनी : रंगमंचीयता
ध्रुवस्वामिनी : पात्र परिकल्पना, गीत योजना,भाषा शैली

ध्रुवस्वामिनी :   ध्रुवस्वामिनी का प्रबंधकीय एवं राजनैतिक कौशल |

इकाई –चार

लक्ष्मी नारायणलाल : नाट्ययात्रा में 'एक सत्य हरिश्चंदर' का महत्वांकन
एक सत्य हरिश्चंदर : शीर्षक कि सार्थकता एवं प्रासंगिकता
एक सत्य हरिश्चंदर: समस्या चित्रण
एक सत्य हरिश्चंदर : अभिनेयता
एक सत्य हरिश्चंदर: पात्र परिकल्पना
एक सत्य हरिश्चंदर: गीत योजना, भाषा शैली ।

सहायक पुस्तकें:

1. भारतीय रंगमंच का विवेचनात्मक इतिहास, डॉ. अज्ञात,पुस्तक संस्थान, कानपुर |
2. पारसी हिंदी रंगमंच, लक्ष्मीनारायणलाल, राजपाल एंड संस, दिल्ली |
3. भारतेन्दु हरिश्चंदर, रामविलास शर्मा,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली |
4. नाटककार भारतेन्दु की रंग कल्पना, सत्येंदर तनेजा,भारतीय भाषा प्रकाशन, दिल्ली|
5. प्रसाद के नाटकों का पुनर्मुल्यांकन, सिद्धनाथ कुमार ग्रन्थथम् , कानपुर|
6. लक्ष्मीनारायणलाल के नाटक और रंगमंच, दयाशंकर,पीताम्बर पब्लिशिंग, दिल्ली|
7. लक्ष्मीनारायणलाल, रघुवंश,दिल्ली: लिपि प्रकाशन|

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2018-19

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प –दो

कोश विज्ञान

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1 : कोश विज्ञान कि उत्पत्ति ,अर्थ, पर्याय , विलोम आदि जानने का सबसे सरल , उपयोगी एवं अनुकरणीय माध्यम है |

CO-2 : इस प्रश्नपत्र में विद्यार्थी कोश कि उपयोगिता और कोश और व्याकरण के अंतरस बंध के बारे में व्यापक जानकारी प्राप्त कर सकता है |

CO-3 : कोश के निर्माण कि प्रक्रिया,कोश के प्रकार , कोश निर्माण में आने वाली कठिनाईयों के बारे में ज्ञान अर्जित कर सकता है |

CO-4 : कोश विज्ञान के साथ ध्वनि,व्याकरण व्युत्पति शास्त्र और अर्थ विज्ञानं का गहन अध्ययन –विश्लेषण करने में सक्षम हो सकता है |

Master of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2018-19

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प –दो

Course Title: कोश विज्ञान

Total:80
CA:16
TH: 64

समय : तीन घन्टे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश

यह प्रश्नपत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है | प्रथम भाग में सम्पूर्ण में से चार-चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा |प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपातसे क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा |प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा|

इकाई –एक

पाठ्य विषय :

- कोश, परिभाषा और स्वरूप, कोश की उपयोगिता, कोश और व्याकरण का अंत: सम्बन्ध |

इकाई – दो

-कोश के भेद – समभाषी, द्विभाषी ओर बहुभाषी कोश, एककालिक और कालक्रमिक कोश, विषय कोश, पारिभाषिक कोश, व्युत्पत्ति कोश, समानांतर कोश, अध्येता कोश, विश्वकोश, बोलीकोश |

इकाई – तीन

-कोश-निर्माण की प्रक्रिया **:** सामग्री संकलन**,** प्रवृष्टिक्रम, व्याकरणिक कोटि, उच्चारण,व्युत्पत्ति,अर्थ, पर्याय, व्याख्या, चित्र प्रयोग ,उप-प्रवृष्टियां, संक्षिप्तियां, सन्दर्भ और प्रतिसन्दर्भ|

-रूप अर्थ सम्बन्ध : अनेकार्थकता, समानार्थकता, समनामता, विलोमता|

इकाई –चार

-कोश निर्माण की समस्याएं : समभाषी, द्विभाषी और बहुभाषी कोशों के सन्दर्भ में, अलिखित भाषाओं का कोश -निर्माण|

-कोशविज्ञान और विषयों का सम्बन्ध : कोशविज्ञान और स्वनविज्ञान,व्याकरण, व्युत्पत्ति शास्त्र और अर्थविज्ञान का सम्बन्ध |

सहायक पुस्तकें:

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, कोश और उसके प्रकार, दिल्ली: साहित्य सहकार|
2. डॉ. कामेश्वर शर्मा, हिन्दी की समस्याएं, पटना: नोवेल्टी एंड कम्पनी|
3. कोश विज्ञान,प्रकाशन केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा|
4. डॉ. हेमचन्द्र जोशी, हिंदी के कोश और कोशशास्त्र के सिद्धान्त-राजर्षि अभिनंदन ग्रन्थ, दिल्ली : प्रथम संस्करण |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2018-19

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प –तीन

पंजाब का मध्यकालीन हिंदी साहित्य

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO–1 : हिंदी भाषा ओर साहित्य के उत्थान में हिंदी भाषी प्रदेशों का ही नहीं अपितु हिंदीतर प्रदेशों का भी बहुत योगदान है |

CO–2: पंजाब का इस क्षेत्र में अवदान अनुकरणीय है |

CO–3 : इस प्रश्नपत्र में पंजाब के हिंदी साहित्य कि पृष्ठभूमि, इतिहास के अतिरिक्त विद्यार्थी , गुरु काव्यधारा , राम काव्यधारा , कृष्ण काव्यधारा व सूफी काव्यधारा के अध्ययन के साथ- साथ गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध भक्तिकालीन गद्य साहित्य का ज्ञानार्जन कर सकेगा |

CO–4 : गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध दरबारी काव्य तथा श्री मद भगवद गीता के सन्दर्भ में अनुवाद एवं भाष्य का अध्ययन कर सकेगा |

Master of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2019-20

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प –तीन

Course Title: पंजाब का मध्यकालीन हिंदी साहित्य

Total:80
CA:16
TH: 64

समय : तीन घन्टे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्नपत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है | प्रथम भाग में सम्पूर्ण में से चार-चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा |प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपातसे क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा | प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा|

इकाई–एक

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र :

पंजाब के हिंदी साहित्य कि पृष्ठभूमि, परम्परा, इतिहास और काल विभाजन – नाथ साहित्य, सिद्ध साहित्य तथा लौकिक साहित्य |

इकाई –दो

गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध पंजाब का भक्ति हिंदी साहित्य |

गुरु काव्य-धारा
राम काव्य-धारा
कृष्ण काव्य-धारा
सूफ़ी काव्य-धारा
गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध भक्तिकालीन गद्य

इकाई –तीन

गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध दरबारी काव्य

पटियाला दरबार
संगरूर दरबार
कपूरथला दरबार
नाभा दरबार
गुरु गोबिंद सिंह का विद्या दरबार

इकाई –चार

जन्मसाखी साहित्य (पुरातन जन्मसाखी के सन्दर्भ में)
टीकाएं (आनंदघन के सन्दर्भ में)
अनुवाद एवं भाष्य (गीता के सन्दर्भ में)

सहायक पुस्तकें:

1. पंजाब का हिंदी साहित्य, डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी, डॉ.कुलविंदर कौर,मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली |
2. पंजाब प्रांतीय हिंदी साहित्य का इतिहास,चंद्रकांत बाली,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली|
3. गुरुमुखी लिपि में हिंदी काव्य,डॉ.हरभजन सिंह,भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली|
4. गुरुमुखी लिपि में हिंदी गद्य,डॉ.गोविन्द नाथ राजगुरु,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली|
5. गुरु गोबिंद सिंह कर दरबारी कवि,डॉ.भारत भूषण चौधरी,स्वास्तिकसाहित्य सदन, कुरुक्षेत्र |
6. पंजाब हिंदी साहित्य दर्पण,शमशेर सिंह 'अशोक',अशोक पुस्तकालय, पटियाला|

Master of Arts (HINDI) (Semester-II)
Session 2018-19

Course Code: MHIL-2261

आधुनिक हिंदी काव्य : छायावादोत्तर काल

Course Outcomes:

Co-1: ‘आधुनिक हिंदी काव्य: छायावादोत्तर काल’ में अज्ञेय, धूमिल एवं मुक्तिबोध के काव्य के माध्यम से छायावाद के बाद कि हिंदी कविता में कथ्य एवं बह्षा शैली के स्तर पर आए परिवर्तनों को समझेंगे |

Co-2: स्वातंत्र्योत्तर युग में जैसे-जैसे पूंजीवाद के फलस्वरूप भौतिकवादी रूझानों ने भारतीय जीवन शैली, राजनीतिक सामाजिक व्यवस्था, जीवन मूल्यों और सामाजिक सम्बन्धों को प्रभावित किया वैसे वे अनुभूतियां किस प्रकार तीव्र और गहन रूप में काव्य में अभिव्यक्त हुई है |उपर्युक्त कवियों का काव्य इसका प्रमाण है|

Co-3: इन कवियों की कविताओं के माध्यम से विद्यार्थी साहित्य के सामाजिक सरोकारों को समजने के साथ-साथ कविता के नवीन रूपों को पढेंगे और समझेंगे |

Master of Arts (HINDI) (Semester-II)
Session 2018 -19

Course Code: MHIL-2261

Course Title: आधुनिक हिंदी काव्य : छायावादोत्तर काल

Total:80

CA:16

TH: 64

समय : तीन घन्टे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश

यह प्रश्नपत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है | प्रथम भाग में सम्पूर्ण में से चार-चार अंकों के छ: प्रश्नपूछेजायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा |प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो,तीनचार, पांच में समानुपातसे क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा |प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा

इकाई –एक

व्याख्या एवं आलोचना के लिए निर्धारित कवि

(क) सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायायन'अज्ञेय' संपादक विद्या निवास मिश्र,राजपाल एंड संस,दिल्ली 1993(असाध्य वीणा,बावरा अहेरी, शब्द और सत्य, औद्योगिक बस्ती, आंगन के पार,कितनी नावों में कितनी बार,नदी के द्वीप |

(ख) गजानन माधव मुक्तिबोध :चाँद का मुंह टेढ़ा है, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,दिल्ली,1964 अँधेरे में |

(ग) धूमिल: संसद से सड़क तक (मोची राम,भाषा की एक रात, पटकथा)

इकाई–दो

अज्ञेय :

-सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायायन 'अज्ञेय' का सामान्य परिचय

- छायावादोत्तर काव्यान्दोलन और अज्ञेय
- अज्ञेय कि जीवन दृष्टि
- प्रयोगवादी कवि अज्ञेय
- अज्ञेय के काव्य की साहित्यिक विशेषताएं
- अज्ञेय की कविता का शिल्प-सौन्दर्य

-असाध्य वीणा :प्रतिपाद्य और शिल्प

इकाई–तीन

गजानन माधव मुक्तिबोध :

-मुक्तिबोध:कवि और उनकी काव्य रचनाएँ

-प्रतिबद्ध कवि मुक्तिबोध
-फैंटेसी का कवि मुक्तिबोध
-'अँधेरे में' कविता का कथ्य और शिल्प

इकाई –चार

धूमिल :

-जनवादी चेतना के कवि धूमिल
-साठोत्तरी हिंदी कविता और धूमिल
-धूमिल की कविता में मानव-मूल्य
- धूमिल की कविता :आज के व्यक्ति का बिम्ब
- धूमिल की कविता : भाषा-शिल्प

सहायक पुस्तकें:

1. धूमिल और उसका काव्य संघर्ष, डॉ. ब्रह्मदेव मिश्र, लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद|
2. धूमिल : काव्य यात्रा,मंजू अग्रवाल,ग्रंथम, कानपुर |
3. समकालीन कविता और धूमिल, डॉ.मंजुल उपाध्याए,अनामिका प्रकाशन,इलाहाबाद |
4. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर,डॉ. संतोष कुमार तिवारी,जवाहर पुस्तकालय,मथुरा |
5. अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या, रामस्वरूप चतुर्वेदी,भारतीय ज्ञानपीठ,दिल्ली|
6. अज्ञेय कवि,ओमप्रकाश अवस्थी, ग्रंथम, कानपुर |
7. अज्ञेय,विश्वनाथ प्रसाद तिवारी,नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली|
8. अज्ञेय की कविता-एक मूल्यांकन चंद्रकांत बादिवडेकर,विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा|
9. मुक्तिबोध का साहित्य विवेक और उनकी कविता,लल्लन राय,मंथन पब्लिकेशन,रोहतक|
10. मुक्तिबोध : प्रतिबद्ध कला के प्रतीक,चंचल चौहान,पांडुलिपि प्रकाशन,दिल्ली|
11. गजानन माधव मुक्तिबोध:जीवन और काव्य,महेश भटनागर, राजेश प्रकाशन,दिल्ली |
12. मुक्तिबोध:विचारक कवि और कथाकार,सुरेन्द्र प्रताप, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली|
13. मुक्तिबोध की काव्य चेतना,हुकुमचंद राजपाल, वाणी प्रकाशन,दिल्ली|
14. मुक्तिबोध ज्ञान और संवेदना:नन्द किशोर नवल,राज किशोर प्रकाशन,नई दिल्ली |
15.अज्ञेय की काव्य तितिषा,नन्द किशोर आचार्य,वाग्देवी प्रकाशन,बीकानेर|
16. वाक्-संदर्श,हरमोहन लाल सूद,पीयूष प्रकाशन,दिल्ली|
17.धूमिल और उसका काव्य-संघर्ष,ब्रह्मदेव मिश्र,लोकभारती,इलाहाबाद|

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2019-20

Course Code: MHIL-2262

हिंदी साहित्य का इतिहास (खंड-दो)

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: इतिहास की दृष्टि से साहित्यक स्तर की रचनाओं का मूल्यांकन करना साहित्य का इतिहास कहलाता है | यदि आधुनिक साहित्य के स्वरूप को जानना है तो यह अत्यंत आवश्यक है कि उसके विगत का विवरण भी जाना जाए|

CO-2: विगत का विवरण एवं बोध जिससे अतीत के जीवन को प्रभावित किया हो ओर भविष्य के लिए भी संकेत हो, साहित्य का इतिहास कहलाता है |

CO-3:अत: वर्तमान भाषा ओर साहित्य के विकास को जानने के लिए यह प्रश्न पत्र अनिवार्य है |

Master of Arts (HINDI) (Semester-II)
Session 2018 -19

Course Code: MHIL-2262

Course Title: हिंदी साहित्य का इतिहास (खंड-दो)

Total:80

CA:16

TH: 64

समय : तीन घन्टे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश

यह प्रश्नपत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है | प्रथम भाग में सम्पूर्ण में से चार-चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा |प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपातसे क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा |प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा|

इकाई –एक

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र :

क) आधुनिक काल की सामाजिक,राजनीतिक,आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि,सन् 1857 ई. की राज्यक्रांति और पुनर्जागरण |

ख) भारतेंदु युग: प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं |

ग) द्विवेदी युग: प्रमुख साहित्यकार,रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं |

इकाई –दो

-द्विवेदी युग : प्रमुख साहित्यकार,रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं |

-हिंदी स्वछंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास,छायावादी काव्य : प्रमुख साहित्यकार,रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं |

इकाई –तीन

-उत्तर छायावादी काव्य की विविध प्रवृतियां –प्रगतिवाद,प्रयोगवाद,नई कविता,नवगीत,समकालीन कविता : प्रमुख कवि और साहित्यिक विशेषताएं |

इकाई –चार

-हिंदी गद्य की प्रमुख विधाओं (कहानी,उपन्यास,नाटक,निबंध,संस्मरण,रेखाचित्र,जीवनी आत्मकथा,रिपोतार्ज आदि) का विकास|
-हिंदी आलोचना का उद्भव और विकास **|**

सहायक पुस्तकें:

1. हिंदी साहित्य का इतिहास,संपा. डॉ.नगेन्द्र,नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली|
2. साहित्य का इतिहास दर्शन,आचार्य नलिन विलोचन शर्मा,बिहार राष्ट्र परिषद्,पटना|
3. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास,डॉ. बच्चन सिंह,लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद|
4. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास-(भाग 1-16),नागरी प्रचारिणी सभा,वाराणसी|
5. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास: बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली|
6. भारतेंदु मंडल के समानांतर और अपूरक मुरादाबाद मंडल, हरमोहन लाल सूद, वाणी प्रकाशन,दिल्ली|

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2018-19

Course Code: MHIL-2263

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1 : भारतीय काव्यशास्त्र के परिचय के उपरान्त इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी पाश्चात्य काव्यशास्त्र के क्रमिक विकास के अंतर्गत प्लेटो , अरसतू , लोजईंस से लेकर आधुनिक आलोचकों की साहित्य एवं साहित्य की समीक्षा से सम्बन्धित विभिन्न धारणाओं से अवगत होंगे|

CO-2 : आधुनिक युग में स्वछंदतावाद , अस्तित्ववाद , उत्तर आधुनिकतावाद इत्यादि दार्शनिक विचारधाराओं के स्वरूप और विशेषताओं को जानेगें |

CO-3 आधुनिक युग के साहित्य पर इन विचार सरणियों के प्रभाव के परिणाम स्वरूप साहित्य में आए परिवर्तनों के मूल्यांकन कि योग्यता प्राप्त करने में सक्षम होंगे |

Master of Arts (HINDI) (Semester-II)
Session 2018 -19

Course Code: MHIL-2263

Course Title: पाश्चात्य काव्यशास्त्र

Total:80

CA:16

TH: 64

समय : तीन घन्टे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश

यह प्रश्नपत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है | प्रथम भाग में सम्पूर्ण में से चार-चार अंकों के छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा |प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपातसे क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा |प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा|

इकाई–एक

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र :

पाश्चात्य आलोचना का इतिहास : संक्षिप्त परिचयात्मक इतिहास |

प्लेटो: काव्य सिद्धांत,प्रत्ययवाद |

अरस्तु : अनुकरण सिद्धांत,त्रासदी-विवेचन,विरेचन सिद्धांत|

इकाई–दो

लोंजानस: उदात्त की अवधारणा और स्वरूप|
मैथ्यू आर्नोल्ड: आलोचना का स्वरूपगत प्रकार्य |

इकाई–तीन

आई. ए.रिचर्डस: संवेगों का संतुलन, व्यवहारिक आलोचना,काव्य भाषा |
इलियट : निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत,परम्परा की अवधारणा |

इकाई – चार

सिद्धांत और वाद : स्वछंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद, आधुनिकतावाद
व्यावहारिक समीक्षा : परीक्षक द्वारा प्रश्नपत्र में पूछे गए किसी काव्यांश की स्वविवेक के अनुसार समीक्षा

सहायक पुस्तकें :

1. पाश्चात्य समीक्षा के सिद्धांत : मैथिली प्रसाद भारद्वाज, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़ ।
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : देवेन्द्र नाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
3. आलोचक और आलोचना : बच्चन सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
4. नई समीक्षा के प्रतिमान, सं. निर्मला जैन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा, संपा. नगेन्द्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
6. पाश्चात्य और पौरस्त तुलनात्मक काव्यशास्त्र, राममूर्ति त्रिपाठी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर ।
7. पाश्चात्य समीक्षा : सिद्धांत और वाद, डॉ. सत्यदेव मिश्र ।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2018-19

Course Code: MHIL-2264

मीडिया –लेखन

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है | इसी से इसके महत्व का अंदाजा लगाया जा सकता है |

CO-2: समाज में मीडिया की भूमिका संवाद वहन कि होती है |

CO-3 : आधुनिक युग में मीडिया का सामान्य अर्थ समाचार पत्र, पत्रिकाओं ,टी.वी.,रेडियो वइंटरनेट आदि से लिया जाता है | आज मीडिया कि ताकत से कोई अनजान नहीं |

CO-4 : इस प्रश्नपत्र के माध्यम से विद्यार्थी प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सम्बन्धी सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त कर मीडिया कि बारीकियों को जानकर पत्रकारिता के क्षेत्र में अग्रसर हो सकता है |

Master of Arts (HINDI) (Semester-II)
Session 2018-19
Course Code: MHIL-2264
Course Title: मीडिया लेखन

Total:80
CA:16
TH: 64

समय : तीन घन्टे
परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश

यह प्रश्नपत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है | प्रथम भाग में सम्पूर्ण में से चार-चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा |प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपातसे क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा |प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा|

इकाई–एक

- दूर संचार: प्रोद्योगिकी एवं चुनौतियां
- विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप: मुद्रण, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य, इन्टरनेट ।
  पारिभाषिक शब्दावली हेतु अनुशंसित पुस्तक-हिंदी भाषा प्रयोजनमूलकता एवं आयाम, वागीश प्रकाशन, जालंधर ।
  विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली पृ. 222 से 226

इकाई – दो

- श्रव्य माध्यम (रेडियो) मौखिक भाषा की प्रकृति, समाचार वाचन एवं लेखन ।
- रेडियो नाटक, उद्‌घोषणा लेखन, विज्ञापन लेखन, फीचर तथा रिपोतार्ज ।

इकाई – तीन

- श्रव्य –दृश्य माध्यम (फिल्म, टेलीविज़न एवं वीडियो) विज्ञापन लेखन,फ़ीचर तथा रिपोतार्ज |
- दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति |

इकाई – चार

दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का सामंजस्य: पार्श्व वाचन (Voice over), पटकथा लेखन(Script Writting), टेली ड्रामा(Tele Drama), डाक्यू ड्रामा (Documentry), संवाद- लेखन(Dialouge Writting)
साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण, विज्ञापन की भाषा ।

सहायक पुस्तकें :

1. जनसंचार माध्यमों में हिंदी, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली ।
2. भारतीय प्रसारण माध्यम, डॉ. कृष्ण कुमार रत्तु, मंगदीप प्रकाशन, जयपुर ।
3. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक, हर्षदेव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।
4. भाषा और प्रोद्योगिकी, विनोद कुमार प्रसाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2018 -19
Course Code: MHIL-2265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प –एक

नाटककार मोहन राकेश

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: मोहन राकेश हिंदी जगत में कभी न भूला जाने वाला नाम है | उनकी नाट्यकृतियों से समृद्ध हुआ ही, भारतीय रंगमंच को भी एक नई ज़मीन मिली |

CO-2: संगीत नाटक आकादमी द्वारा मोहन राकेश के 'आषाढ़ का एक दिन ' नाटक का सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतिकरण के लिए पुरस्कृत किया गया | उसके बाद से नाटक लगातार आगे बढता जा रहा है |

CO-3: इस प्रश्नपत्र के माध्यम से विद्यार्थी नाटककार मोहन राकेश के जीवन , उनके नाट्य प्रयोगों तथा उनकी नाट्य भाषा को जानने , समझने में सक्षम हो पाएंगे |

CO-4: साथ ही वे नाटकों के मूलपाठ , लेखकीय भूमिका और सृजन प्रक्रिया के सम्बन्ध में भी गहन अध्ययन कर सकेंगे |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2018-19

Course Code: MHIL- 2265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प – एक

Course Title: नाटककार मोहन राकेश

Total: 80
CA: 16
TH : 64

समय : तीन घंटे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश :

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है जो कि व्याख्या से सम्बंधित है । प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार- चार अंकों के छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा । भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक, दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा ।

इकाई – एक

व्याख्या के लिए निर्धारित नाटक :

-आषाढ़ का एक दिन : राजपाल प्रकाशन, दिल्ली
-लहरों के राजहंस : राजपाल प्रकाशन, दिल्ली
-आधे अधूरे : राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

इकाई – दो

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र :

नाटक : विधागत वैशिष्ट्य, तत्व तथा प्रकार
मोहन राकेश : व्यक्ति और नाटककार
'आषाढ़ का एक दिन' : मोहन राकेश
आषाढ़ का एक दिन का प्रतिपाद्य और मुख्य समस्याएं
कालिदास का अन्तर्द्वन्द्व, पात्र-परियोजना, भाषा-शैली
आषाढ़ का एक दिन : नाम की सार्थकता
आषाढ़ का एक दिन : रंगमंचीयता सार्थकता

इकाई – तीन

मोहन राकेश की नाट्य – सृष्टि एवं नाट्य प्रयोग
मोहन राकेश रंगमंच के प्रबल समर्थ नाटककार
'लहरों के राजहंस' : मोहन राकेश
लहरों के राजहंस का नाट्यात्मक वैशिष्ट्य
लहरों के राजहंस: प्रतिपाद्य एवं मुख्य समस्याएँ
लहरों के राजहंस: विचारधारा और कथ्य – चेतना
लहरों के राजहंस: नाम की सार्थकता
लहरों के राजहंस: रंगमंचीयता ।

इकाई – चार

मोहन राकेश के नाटकों की मूल्य-चेतना
मोहन राकेश की नाट्यभाषा को योगदान
'आधे अधूरे' : मोहन राकेश
आधे अधूरे का नाट्यात्मक वैशिष्ट्य
आधे अधूरे: समकालीन मध्यवर्गीय जीवन का दस्तावेज़
आधे अधूरे: विचारधारा, भाषा तथा कथ्य चेतना
आधे अधूरे: नाम की सार्थकता
आधे अधूरे: रंगमंचीयता एक नवीन नाट्य-प्रयोग

सहायक पुस्तकें:

1. मोहन राकेश और उनके नाटक, डॉ. गिरीश रस्तोगी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. मोहन राकेश की रंग-सृष्टि, डॉ.जगदीश शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, वाराणसी।
3. नाटककार मोहन राकेश, डॉ. तिलकराज शर्मा, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
4. आधुनिक नाटक का मसीहा: मोहन राकेश, डॉ. गोविन्द चातक, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली।
5. आधे – अधूरे: समीक्षा, डॉ. राजेश शर्मा, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. हिन्दी साहित्य में प्रतीक नाटक, डॉ. रामनारायण लाल, आशा प्रकाशन, कानपुर।
7. मोहन राकेश, व्यक्तित्व तथा कृतित्व, डॉ. सुषमा अग्रवाल, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
8. हिन्दी रंगमंच वार्षिकी, डॉ. शरद नागर, रंगभारती प्रकाशन, दिल्ली।
9. मोहन राकेश के नाटकों में मिथक और यथार्थ, डॉ. अनुपमा शर्मा, नचिकेता प्रकाशन, दिल्ली।
10. हिंदी नाटक का उद्भव और विकास, दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस, दिल्ली।
11. मोहन राकेश के नाटक, द्विजराय यादव, अशोक प्रकाशन, दिल्ली।
12. लहरों के राजहंस: विविध आयाम, जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।
13. आषाढ़ का एक दिन: वस्तु और शिल्प, विश्व प्रकाश बटुक दीक्षित, राजपाल पब्लिशर्ज़, दिल्ली।
14. रंग शिल्पी : मोहन राकेश, नरनारायण राय, कादम्बरी, दिल्ली।
15. रंगमंच की भूमिका और हिन्दी नाटककार, रघुवरदयाल वार्ष्णेय, साहित्यलोक, कानपुर।
16. नाटककार मोहन राकेश: संवाद शिल्प, मदन लाल, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली।
17. मोहन राकेश की कृतियों में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, मिथिलेश गुप्ता, कृष्णा ब्रदर्स, दिल्ली।
18. साठोत्तरी हिन्दी नाटकों का रंगमंचीय अध्ययन, राकेश वत्स, हिन्दी बुक सेंटर, दिल्ली।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2018 -19

Course Code: MHIL-2265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प-दो

भारतीय साहित्य

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: सम्पूर्ण भारतीय साहित्य के बारे में जानने के लिए यह प्रश्नपत्र सम्पूर्ण भारत को जोड़ने का काम करता है |

CO-2: अपने-अपने क्षेत्रों के अतिरिक्त सम्पूर्ण भारत में किन-किन साहित्यकारों ने हिंदी भाषा ओर साहित्य में अपना योगदान दिया है इसकी पूरी जानकारी इस प्रश्नपत्र के माध्यम से मिलेगी |

CO-3: उड़िया,बंगला ओर मराठी के क्रमश: कविताएं, उपन्यास ओर नाटक के अनुवाद मध्यं से विद्यार्थी भारतीय साहित्य कि समृद्ध परम्परा से परिचित होता है |

CO-4: इन तीनों विधाओं का हिंदी से तुल्नात्मिक अध्ययन विद्यार्थी की विश्लेषण की दृष्टि को भी विकसित करता है |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2018-19

Course Code: MHIL- 2265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प – दो

Course Title: भारतीय साहित्य

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है। प्रथम भाग अनिवार्य है। प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार- चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा। भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक, दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा।

इकाई – एक

अध्ययन एवं व्याख्या के लिए निर्धारित कृतियां :

-वर्षा की सुबह (उड़िया-काव्य-संग्रह) सीताकांत महापात्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
पाठ्यक्रम में निर्धारित कविताएँ:
आकाश, वर्षा की सुबह नारी वस्त्र-हरण, आधी रात, शब्द से दो बातें, समुद्र की भूल, अकेले-अकेले, जाड़े की साँझ, समुद्र तट, लट्टू डरता है मौत से वह आदमी, चूल्हे की आग।
अग्निगर्भ (बंगला उपन्यास) महाश्वेता देवी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979
घासी राम कोतवाल (मराठी नाटक) विजय तेंदुलकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 1974

इकाई – दो

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र

कवि सीताकांत महापात्र का सामान्य परिचय एवं जीवन दर्शन, वर्षा की सुबह: काव्य सौन्दर्य (साहित्यिक)
वर्षा की सुबह: प्रकृति चित्रण, वर्षा की सुबह: मानवीय सम्बन्ध और मूल्य चेतना।
भारतीय साहित्य की अवधारणा और स्वरूप |हिन्दी और उड़िया कविता का तुलनात्मक अध्ययन।

इकाई – तीन

महाश्वेता देवी का सामान्य परिचय : औपन्यासिक यात्रा के सन्दर्भ में, महाश्वेता देवी का वैचारिक दृष्टिकोण, अग्निगर्भ उपन्यास का वैशिष्ट्य, मूल प्रतिपाद्य, पात्र तथा चरित्र-चित्रण, अग्निगर्भ उपन्यास में बंगाल का आदिवासी जीवन एवं बंगाली संस्कृति ।
हिन्दी और बंगला उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन ।

इकाई – चार

विजय तेंदुलकर की नाट्य यात्रा एवं घासीराम कोतवाल का वैशिष्ट्य, घासीराम कोतवाल नाटक की समीक्षा, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख समस्याएँ, घासीराम कोतवाल नाटक में लोक परम्परा का प्रवाह, घासीराम कोतवाल नाटक में रंगमंचीयता, घासीराम कोतवाल नाटक में मराठी का समसामयिक जीवन एवं मराठी संस्कृति, भारतीय नाटक के सन्दर्भ में घासीराम कोतवाल ।
भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ
हिन्दी और मराठी नाटक का तुलनात्मक अध्ययन ।

सहायक पुस्तकें :

1. बंगला साहित्य का इतिहास, प्रकाशक : भारतीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ।
2. भारतीय साहित्य का संकेतिक इतिहास, डॉ. नगेन्द्र कार्यन्वयन समिति, दिल्ली विश्वविद्याल, दिल्ली।
3. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याए, राम विलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
4. भारतीय साहित्य, डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।
5. हिंदी साहित्येतिहास- दर्शन की भूमिका, डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी, निर्मल प्रकाशन, दिल्ली ।
6. भारतीय साहित्येतिहासलेखन की समस्याएं, रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।

Masters of Arts (HINDI)   (Semester-II)

Session 2018-19

Course Code: MHIL-2265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प-तीन

पंजाब का आधुनिक हिंदी साहित्य

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: हिंदी की विविध विधाओं के विकास में पंजाब का योगदान अतुलनीय है |

CO-2: इस प्रश्नपत्र में पंजाब के आधुनिक हिंदी साहित्य कि पृष्ठभूमि के हस्ताक्षरों का अध्ययन भी विद्यार्थी कर सकेगा |

CO-3: पंजाब के साहित्यकारों ने कविता , कहानी , उपन्यास , नाटक यहाँ तक कि पत्रकारिता के क्षेत्र में सराहनीय योगदान दिया है |

CO-4: इस प्रश्नपत्र के माध्यम से पंजाब प्रांतीय हिंदी साहित्य कि जानकारी भी मिलती है जो निश्चित रूप से हिंदी भाषा और साहित्य के स्तर को गरिमा प्रदान करती है |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2018-19

Course Code: MHIL- 2265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प – तीन

Course Title: पंजाब का आधुनिक हिन्दी साहित्य

Total: 80
CA: 16
TH : 64

समय : तीन घंटे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश :

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है। प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार– चार अंकों के छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा । भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक, दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा ।

इकाई – एक

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र

पंजाब के आधुनिक हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि
पंजाब के आधुनिक हिन्दी साहित्य के मुख्य हस्ताक्षर :

- पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी
- सुदर्शन
- उपेन्द्रनाथ अश्क
- भीष्म साहनी
- कुमार विकल

इकाई – दो

पंजाब का उपन्यास साहित्य में योगदान
पंजाब का कहानी साहित्य में योगदान
पंजाब का नाटक साहित्य में योगदान

इकाई – तीन

पंजाब का कविता में योगदान
पंजाब का निबंध साहित्य में योगदान
पंजाब का आलोचना में योगदान

इकाई – चार

पंजाब का पत्रकारिता में योगदान
पंजाब के स्वातंत्र्योतर हिन्दी साहित्य का योगदान
पंजाब प्रांतीय हिन्दी साहित्य : उपलब्धि और सीमा

सहायक पुस्तकें :

1. पंजाब का हिंदी साहित्य, डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी, डॉ. कुलविंदर कौर, मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली ।
2. पंजाब प्रांतीय हिंदी साहित्य का इतिहास, चंद्रकांत बाली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
3. गुरुमुखी लिप्पी में हिंदी काव्य, डॉ. हरभजन सिंह, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली ।
4. गुरुमुखी लिप्पी में हिंदी गद्य, डॉ. गोविन्द नाथ राजगुरु, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, डॉ. भारत भूषन चौधरी, स्वास्तिक साहित्य सदन, कुरुक्षेत्र ।
6. पंजाब हिंदी साहित्य दर्पण, शमशेर सिंह 'अशोक', अशोक पुस्तकालय, पटियाला ।